म.प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
सा विद्या या विमुक्तये

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
मध्य प्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

TESS India

भाषा और साक्षरता

अवलोकन, आकलन और प्रतिपुष्टि

भारत में विद्यालय समर्थित
शिक्षक शिक्षा

www.TESS-India.edu.in

http://creativecommons.org/licenses/

The Open University

UKaid from the British people

एस.आर.मोहन्ती
अपर मुख्य सचिव

अ.शा.पत्र क्र R.S.K/10
दूरभाष कार्यालय - 0755-4251330
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग
मंत्रालय, वल्लभ भवन, भोपाल-462 004
भोपाल, दिनांक 20-1-2016

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

बच्चों की शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण और रोचक बनाने के लिए स्कूल शिक्षा विभाग निरन्तर प्रयासरत् है। आप सभी के प्रयासों से शिक्षकों के शिक्षण कौशल में भी निखार आया है और शालाओं में कक्षा शिक्षण भी आंनददायी तथा बेहतर हुआ है।

इसी दिशा में शिक्षकों को बाल केन्द्रित शिक्षण की ओर उन्मुख करने और शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्देश्यों को लेकर, TESS India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) का विकास किया गया हैं। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता व सुगमतापूर्वक किया जा सकता है। आशा है कि ये संसाधन, शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन और क्षमतावर्द्धन में लाभकारी और उपयोगी सिद्ध होंगे।

राज्य शिक्षा केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में TESS India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया गया हैं। आशा है इन संसाधनों के उपयोग से प्रदेश के शिक्षक और शिक्षक प्रशिक्षक लाभान्वित होंगे और कक्षाओं में पठन पाठन को रूचिकर और गुणवत्तायुक्त बनाने में मदद मिलेगी।
शुभकामनाओं सहित,

(एस.आर.मोहन्ती)

दीप्ति गौड मुकर्जी
आयुक्त
राज्य शिक्षा केन्द्र एवं
सचिव
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग

अर्द्ध शा. पत्र क्र. : 8
दिनांक : 12-1-16
पुस्तक भवन, वी-विंग
अरेरा हिल्स, भोपाल-462011
फोन : (का.) 2768392
फैक्स : (0755) 2552363
वेवसाइट : www.educationportal.mp.gov.in
ई-मेल : rskcommmp@nic.in

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

सभी बच्चों को रूचिकर और बाल केन्द्रित शिक्षा उपलब्ध हो इसके लिए आवश्यक है कि हमारे शिक्षकों को शिक्षण की नवीनतम तकनीकों और शिक्षण विधियों से परिचित कराया जाए साथ ही इन तकनीकों के उपयोग के लिए उन्हे प्रोत्साहित भी किया जाए। TESS India द्वारा तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) के उपयोग से शिक्षक शिक्षण प्रविधि के व्यावहारिक उपयोग को सीख सकते हैं। इनकी सहायता से शिक्षक न केवल विषय वस्तु को सुगमता पूर्वक पढ़ा सकते हैं बल्कि पठन पाठन की इस प्रकिया में बच्चों की अधिक से अधिक सहभागिता भी सुनिश्चित कर सकते हैं।

राज्य शिक्षा केन्द्र स्कूल शिक्षा विभाग ने स्थानीय भाषा में तैयार किये गये इन मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को अपने पोर्टल www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया है।

आशा हैं, कि आप इन संसाधनों का कक्षा शिक्षण के दौरान नियमित रूप से उपयोग करेंगे और अपने शिक्षण कौशल में वृद्धि करते हुए बच्चों की पढ़ाई को आनंददायक बनाने का प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

(दीप्ति गौड़ मुकर्जी)

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

टेस–इण्डिया स्थानीयकृत ओईआर निर्माण में सहयोग

मार्गदर्शन एवं समीक्षा :
श्रीमती स्वाति मीणा नायक, अपर मिशन संचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एच. के. सेनापति, प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. ओ.पी.शर्मा, अपर संचालक, मध्यप्रदेश एससीईआरटी
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
प्रो.जयदीप मंडल, विभागाध्यक्ष विज्ञान एवं गणित शिक्षा संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आर. रायजादा, सहप्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष विस्तार शिक्षा, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. वी.जी. जाधव, से.नि. प्राध्यापक भौतिक, एनसीईआरटी
डॉ. के. बी. सुब्रमण्यम से.नि. प्राध्यापक गणित, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आई. पी. अग्रवाल से.नि. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. अश्विनी गर्ग सहा. प्राध्यापक गणित संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. एल. के. तिवारी, सहप्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री एल.एस.चौहान, सहा. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. श्रुति त्रिपाठी, सहा. प्राध्यापक अंग्रेजी, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. रजनी थपलियाल, व्याख्याता अंग्रेजी, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. मधु जैन, व्याख्याता शास. उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल
डॉ. सुशोवन बनिक, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. सौरभ कुमार मिश्रा, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री. अजी थॉमस, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. राजीव कुमार जैन, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
स्थानीयकरण :
भाषा एवं साक्षरता
डॉ. लोकेश खरे, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एम.एल. उपाध्याय से.नि. व्याख्याता शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय मुरैना
श्री रामगोपाल रायकवार ,कनि. व्याख्याता, डाइट कुण्डेश्वर, टीकमगढ़
डॉ. दीपक जैन अध्यापक, शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय क्र 1 टीकमगढ़
अंग्रेजी
श्री राजेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्रीमती कमलेश शर्मा. डायरेक्टर , ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री हेमंत शर्मा, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री मनोज कुमार गुहा वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी. मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एफ.एस.खान, वरि.व्याख्याता, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान (आईएएसई) भोपाल
श्री सुदीप दास, प्राचार्य, शास.उ.मा.विद्यालय दालौदा, मन्दसौर
श्रीमती संगीता सक्सेना, व्याख्याता, ,शास.कस्तूरबा कन्या उ.मा.विद्यालय भोपाल
गणित
श्री बी.बी. पी. गुप्ता, समन्वयक गणित, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ए. एच. खान प्राचार्य शास.उ.मा.विद्यालय रामाकोना, छिंदवाड़ा
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद गुप्त , प्राचार्य शास. जीवाजी ऑब्जर्वेटरी उज्जैन
डॉ.आर,सी. उपाध्याय, वरि. व्याख्याता, डाइट, सतना
डॉ. सीमा जैन, व्याख्याता, शास. कन्या उ.मा.विद्यालय गोविन्दपुरा, भोपाल
श्री सुशील कुमार शर्मा, शिक्षक, शास. लक्ष्मी मंडी उ.मा.विद्यालय, अशोका गार्डन, भोपाल
विज्ञान
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
डॉ. सुसम्मा जॉनसन, व्याख्याता एस.आई.एस.ई. जबलपुर मध्यप्रदेश
डॉ.सुबोध सक्सैना, समन्वयक एससीईआरटी मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री अरूण भार्गव, वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्रीमती सुषमा भट्ट, वरि.व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ब्रजेश सक्सेना, प्राचार्य, एससीईआरटी ,मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. रेहाना सिद्दकी से.नि. व्याख्याता सेन्ट फ्रांसिस हा. से. स्कूल भोपाल

*TESS-India (*विद्यालय समर्थित शिक्षक शिक्षा*)* का उद्देश्य मुक्त शैक्षिक संसाधनों की सहायता से भारत में प्रारंभिक और सेकेण्डरी शिक्षकों के कक्षा अभ्यास व कक्षा निष्पादन को सुधारना है जिसमें वे इन संसाधनों की सहायता से विद्यार्थी-केंद्रित, सहभागी दृष्टिकोणों का विकास कर सकें। टेस इंडिया के मुक्त शैक्षिक संसाधन शिक्षकों के लिए स्कूल पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त,सहयोगी पुस्तिका या संसाधन की तरह हैं। इसमें शिक्षकों के लिए कुछ गतिविधियां दी गई हैं जिन्हे वे कक्षाओ में विद्यार्थियों के साथ प्रयोग में ला सकते हैं, इसके साथ साथ कुछ केस स्टडी दी गई हैं जो यह बताती हैं कि कैसे अन्य शिक्षकों ने पाठ्य विषय को कक्षाओं में पढ़ाया और अपनी विषय संबंधी जानकारियों को बढ़ाने तथा पाठ योजनाओं को तैयार करने में संसाधनों का उपयोग किया।

TESS-India OER भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार किये गये है और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट रूप में उपयोग के लिए उपलब्ध हैं *(http://www.tess-india.edu.in)*। *OER* कार्यक्रम से जुड़े प्रत्येक भारतीय राज्य के शिक्षकों के उपयोग के लिए उपयुक्त तथा कई संस्करणों में उपलब्ध हैं तथा शिक्षक व उपयोगकर्ता इन्हे अपनी स्थानीय आवश्यकताओं और सन्दर्भो के अनुरूप इनका स्थानीय करण करके उपयोग कर सकते हैं।

प्रस्तुत संस्करण मध्यप्रदेश की स्थानीय आवश्यकताओं और संदर्भो को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

वीडियो संसाधन

इस इकाई में कुछ गतिविधियों के साथ यह आइकॉन (संकेत) दिया गया है*:* *.* इसका अर्थ है कि आप उक्त विशिष्ट विषयवस्तु या शैक्षणिक प्रविधि को और अधिक समझने के लिए *TESS-India* के वीडियो संसाधनों की मदद ले सकते हैं।

TESS-India वीडियो ससांधन (Resources) भारतीय परिप्रेक्ष्य में कक्षाओं में उपयोग की जा सकने वाली सीखने–सिखाने की विविध तकनीकों को दर्शाते हैं। हमें यकीन है कि इनसे आपको इसी प्रकार की तकनीकें अपनी कक्षा में करने में मदद मिलेगी। यदि इन वीडियो संसाधनों तक आपकी पहुँच नहीं हो तो कोई बात नहीं। यह वीडियो पाठ्यपुस्तक का स्थान नहीं लेते, बल्कि उसको पढ़ाने में आपकी मदद करते हैं।

TESS-India के वीडियो संसाधनों को *TESS-India* की वेबसाइट *http://www.tess-india.edu.in/* पर ऑनलाइन देखा जा सकता है या डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त आप इन वीडियो को सीडी या मेमोरी कार्ड में लेकर भी देख सकते हैं।

संस्करण *2.0 LL15v1*
Madhya Pradesh

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है: http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/

TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

इस इकाई में आप अपने विद्यार्थियों के भाषा और साक्षरता विकास का अवलोकन, आकलन और प्रतिपुष्टि देने के तरीकों को जानेंगे। आप यह सीखेंगे कि किस तरह सतत अवलोकन, आकलन और प्रतिपुष्टि आपको आपके विद्यार्थियों की प्रगति के बारे में मूल्यवान जानकारी दे सकता है, और किस तरह ये जानकारी आगे के पाठ योजना बनाने और अध्यापन में सहायक हो सकती है।

इस इकाई से आप क्या सीख सकते हैं

- नियमित अनौपचारिक निगरानी, आकलन और प्रतिपुश्टि के अवसरों को अपने भाषा पाठों में किस प्रकार शामिल करें।
- अपनी आगे की अध्यापन योजनाओं में विद्यार्थियों के आकलन के प्रभावों पर किस प्रकार विचार करें।
- अपने विद्यार्थियों को किस प्रकार स्व आकलन और साथी द्वारा आकलन प्रक्रिया में शामिल करें।

यह तरीका क्यों महत्वपूर्ण है

परीक्षाओं से वर्ष में मात्र एक या दो बार विद्यार्थियों की उपलब्धियों के बारे में जानकारी मिलती है और आमतौर पर वे उनके पठन और लेखन कौशलों पर केंद्रित होती हैं। जबकि, प्रत्येक पाठ में आपके विद्यार्थियों की प्रगति का अवलोकन करने, आकलन करने और प्रतिपुष्टि देने के अवसर उपलब्ध होते हैं। इस सन्दर्भ में 'फीडबैक' का अर्थ है किसी विशिष्ट शिक्षण उद्देश्य के सन्दर्भ में विद्यार्थियों को उनके प्रदर्शन की जानकारी देना और इस बारे में उनका मार्गदर्शन करना कि वे किस तरह इसमें सुधार कर सकते हैं या आगे बढ़ सकते हैं।

अवलोकन, आकलन और प्रतिपुष्टि विद्यार्थियों के सीखने, बोलने, पढ़ने और लिखने के विकास के कई पहलुओं से संबंधित हो सकते हैं। अपने विद्यार्थियों के बारे में सतत जानकारी एकत्र करके और किन विद्यार्थियों को कठिनाई हो रही है या कौन-से विद्यार्थी आगे की चुनौतियों के लिए तैयार हैं, इसकी पहचान करके आप कक्षा में हर किसी की ज़रूरतों को बेहतर ढंग से पूरा करने के लिए अपने अध्यापन में बदलाव कर सकते हैं। इस ईकाई में आपको बताया गया है कि किस तरह अध्यापन, अवलोकन, आकलन और प्रतिपुश्टि देने की प्रक्रिया को आपके नियमित कक्षा अभ्यास से जोड़ा जा सकता है।

1 अवलोकन, आकलन और प्रतिपुष्टि के बारे में दृष्टिकोण और अभ्यास

निगरानी, आकलन और प्रतिपुष्टि के बारे में आपका दृष्टिकोण और अनुभव क्या हैं? यह जानने के लिए गतिविधि 1 को आज़माकर देखें।

गतिविधि 1: दृष्टिकोण और अनुभव
एक साथी शिक्षक के साथ मिलकर निम्नलिखित कथनों को पढ़ें। तय करें कि क्या आप उनसे पूरी तरह या आंशिक रूप से सहमत हैं या असहमत हैं। अपने विचारों के लिए कारण दें। • विद्यार्थियों को परीक्षाएँ चिंताजनक और तनावपूर्ण लगती हैं। इसके कारण उनका प्रदर्शन उनकी क्षमता से कम हो सकता है। • टेस्ट और परीक्षाएँ अक्सर सीखने की अवधि के अंत में ली जाती हैं और आमतौर पर इनके लिए प्रतिपुष्टि नहीं दिया जाता। इसका अर्थ यह है कि उनके परिणामों पर समयोचित व सतत् पद्धति में कार्रवाई नहीं की जा सकती। • मूल्यांकन और परीक्षाएँ भाषा सीखने के पहलुओं का आकलन करती हैं, जैसे बोध, व्याकरण और शब्दावली, लेकिन इनमें सुनने या बोलने का आकलन नहीं होता। • आमतौर पर अध्यापक अपने पाठों के दौरान इतने ज्यादा व्यस्त होते हैं कि वे उसके साथ-साथ अपने विद्यार्थियों की देख रेख के लिए समय नहीं दे सकते। • विद्यार्थी अक्सर उनके कार्य के बारे में दिए जाने वाले प्रतिपुष्टि को अनदेखा कर देते हैं। उनकी रुचि केवल उनके कुल ग्रेड में होती है। • अवलोकन के रिकॉर्ड रखना समय लेने वाला काम हो सकता है। इसके अलावा, रिकॉर्ड हमेशा ही विद्यार्थी की क्षमताओं का वास्तविक चित्र प्रस्तुत नहीं करते।

विचार कीजिए

- आपके स्वयं के कक्षा अनुभवों के संबंध में उपर्युक्त कथनों पर आपकी प्रतिक्रिया के क्या प्रभाव हैं? इन बिंदुओं पर ध्यान देने के लिए आप क्या परिवर्तन कर सकते हैं?
- अपने विद्यार्थियों का आकलन करते समय आप किस जानकारी को सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण मानते हैं?

2 अपनी कक्षा का अवलोकन करना

गतिविधि 2: अवलोकन करना और प्रतिपुश्टि देना
संसाधन 1, 'अवलोकन करना और फीडबैक देना' पढ़ें। जब आप यह दस्तावेज को पढ़ें हैं, तो साथ ही उस पर टिप्पणी लिखें, जो विचार आप अपने से ही क्रियान्वित कर रहे हैं, जो विचार आपको आकर्षित करते हैं और आप जिन्हें आसानी से लागू कर सकते हैं, अथवा आपके मन में कोई प्रश्न हैं, तो उन्हें दर्ज करें। यदि संभव हो, तो किसी सहकर्मी के साथ मिलकर यह काम करें और अपनी टिप्पणियों की तुलना करें।

वीडियो: अवलोकन करना और फीडबैक देना

अगली दो गतिविधियाँ - जो अलग अलग दिनों पर की जानी चाहिए - आपको इस उद्देश्य से आमंत्रित करती हैं कि जब आप आपके विद्यार्थी अपना काम कर रहे हों, तब आप उनकी अवलोकन कैसे करें।

गतिविधि 3: पूरी कक्षा का अवलोकन करना

चित्र **1** पूरी कक्षा की अवलोकन करना।

अपने विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से और 15 मिनट तक शान्ति से बैठकर कोई कक्षा कार्य करने के लिए दें। पाठ्यपुस्तक-आधारित एक संक्षिप्त पठन या लेखन गतिविधि इसके लिए आदर्श रहेगी। जब आपके विद्यार्थी अपना काम कर रहे हों, तो पीछे खड़े रहकर उनका अवलोकन करें। निम्नांकित प्रश्नों पर विचार करें:

- आपके विद्यार्थी किस तरह के काम कर रहे थे?
- क्या उनमें से कुछ इस बारे में अनिश्चित लग रहे थे कि उन्हें क्या करना है? आपको कैसे पता लगा?
- आपके विद्यार्थियों की काम करने की गति क्या अलग अलग है? आप किस तरह बता सकते हैं?
- अपना काम जल्दी पूरा कर लेने वाले विद्यार्थी उसके बाद क्या कर सकते हैं?
- आपको ऐसा लगता है कि कुछ विद्यार्थी अपना काम दिए गए समय में पूरा नहीं कर सकेंगे? उनकी किस प्रकार सहायता की जा सकती है?
- आपने अपने विद्यार्थियों के लिए जो काम निर्धारित किए हैं, उनसे आप विद्यार्थियों के सीखने का मूल्यांकन कैसे करेंगे?

गतिविधि 4: समूहों का अवलोकन करना

चित्र **2** समूहों का अवलोकन करना।

अपनी कक्षा को पाँच या छः लोगों के समूहों में बाँटें और उनसे बातचीत-आधारित एक संक्षिप्त कार्य करने को कहें। इसमें किसी चित्र के आधार पर एक कहानी बनाना या किसी समस्या अथवा विवादास्पद प्रश्न का उत्तर देना शामिल हो सकता है। समूह चर्चा 15 मिनट से ज्यादा समय की नहीं होनी चाहिए। अपने विद्यार्थियों को याद दिलाएँ कि उन्हें किस तरह एक-दूसरे के साथ विनम्रतापूर्वक, बारी-बारी से और एक-दूसरे की बात सुनते हुए काम करना है।

कक्षा का चक्कर लगाएँ और अपने विद्यार्थियों का अवलोकन करें व उनकी बातें सुनें।

निम्नांकित प्रश्नों पर विचार करें:

- आपके विद्यार्थी किस तरह के काम कर रहे थे?
- क्या वे आपके निर्देशों को समझते हैं? यह आप किस तरह बता सकते हैं?
- उन्होंने इस कार्य के लिए खुद को कैसे व्यवस्थित किया है?
- क्या उन्हें अतिरिक्त सहायता की ज़रुरत है? यदि हाँ, तो किस तरह की सहायता?
- क्या कुछ विद्यार्थी चुपचाप बैठे रहते हैं?
- क्या कुछ विद्यार्थी विशेष रूप से आत्मविश्वासी हैं?
- आप कार्य में विद्यार्थियों की सहभागिता और इससे उनके सीखने का मूल्यांकन किस तरह करेंगे?

विचार कीजिए

गतिविधियों 3 और 4 में आपको बताया गया कि जब आपके विद्यार्थी अकेले या समूह में भाषा- और साक्षरता-आधारित कार्य करते हैं, तब आप उनका अवलोकन और निगरानी कैसे करें विचार कीजिए।

- इन दो अवलोकन कार्यों की तुलना किस प्रकार की जा सकती है?
- अकेले में और समूह में आपके विद्यार्थियों का अवलोकन करना कितना सरल था?
- ऐसा करके आपने क्या सीखा?
- आप इस जानकारी को कैसे दर्ज कर सकते हैं?

ध्यानपूर्वक अवलोकन करना एक प्रभावी शिक्षक का मुख्य गुण है, क्योंकि इससे उन्हें यह समझने में मदद मिलती है कि उनके द्वारा निर्धारित कार्यों से उनके विद्यार्थियों को किस हद तक सीखने में लाभ हो रहा है।

चाहे ऐसे अवलोकन में पूरी कक्षा शामिल हो, छोटे समूह शामिल हों या एक–एक विद्यार्थी शामिल हों, निम्नलिखित प्रश्न शिक्षक के मन में सबसे पहले आना चाहिए कि मेरे विद्यार्थी इस पाठ को किस तरह अनुभव कर रहे हैं और समझ रहे हैं?

3 विद्यार्थियों के आकलन और फीडबैक के अलग अलग तरीके

केस स्टडी 1 में, आप विद्यार्थियों के आकलन और फीडबैक के बारे में दो शिक्षकों के तरीकों के बारे में पढ़ेंगे।

केस स्टडी 1: विद्यार्थियों के आकलन और प्रतिपुष्टि के बारे में दो शिक्षकों के तरीके।

सुश्री आशा इंदौर के पास एक ग्रामीण विद्यालय में कक्षा चार की शिक्षिका हैं।

हाल ही में मैंनें 'बस के नीचे बाघ' या 'A tiger under the bus' पढ़ाना ख़त्म किया।

मैंने इसके फॉलो अप के लिए विद्यार्थियों के वर्तनी कौशल को जाँचना तय किया। मैंने पाठ से दस कठिन शब्द श्यामपट पर लिखे और मेरे विद्यार्थियों से कहा कि वे अपनी कॉपी में उनकी नकल करें और कल टेस्ट(परिक्षण/जॉच) के लिए तैयार रहें।

अगली सुबह, मैंने एक-एक करके वे शब्द पढ़े और विद्यार्थियों से उन्हें लिखने को कहा। मैंने उनकी कॉपियाँ लीं, उनका काम जाँचा और कॉपियां उन्हें लौटा दीं।

कई विद्यार्थियों को पूरे अंक मिले थे। कुछ विद्यार्थियों ने वर्तनी की त्रुटियों कीं और उन्हें अंक भी कम मिले। मैंने विद्यार्थियों से कहा कि जिन्हें सबसे ज्यादा अंक मिले हैं, वे अपने हाथ खड़े करें, इसके बाद जिन्हें कम मिले हैं, वे करें। जिन लोगों का प्रदर्शन कम अच्छा रहा था, मैंने उनसे कहा कि वे घर में फिर से इन शब्दों को लिखने का अभ्यास करें।

श्री द्विवेदी जबलपुर के एक बड़े स्कूल में कक्षा पाँच के शिक्षक हैं।

पिछले कुछ पाठों में मेरे विद्यार्थियों ने जो शब्द पढ़े थे, मैं उन शब्दों के लिए उनके वर्तनी कौशल का आकलन करना चाहता था। मैंने उनसे कहा: 'आज हम श्रुतलेखन गतिविधि करेंगे।'

फिर मैंने विद्यार्थियों को चार के समूहों में काम करने को कहा। मैंने उन्हें समझाया कि मैं पाँच छोटे वाक्य पढ़कर सुनाऊँगा और लिखना शुरू करने से पहले उन्हें हर वाक्य को ध्यान से सुनना होगा। पहले मैं सतुष्ट हुआ कि हर कोई मेरे निर्देशों को समझ गया है या नहीं। इसके बाद मैंने कुछ वाक्य पढ़कर सुनाए और उन वाक्यों को लिखने के लिए विद्यार्थियों को समय दिया।

जब उन्होंने अपना काम पूरा कर लिया, तो मैंने अपने विद्यार्थियों से कहा कि वे अपने समूहों के अन्य सदस्यों के साथ अपने वाक्यों पर चर्चा करें, उनके कार्य के साथ तुलना करें और यदि ज़रूरी हो, तो सुधार करें। अंत मैं, मैंने उनसे कहा कि वे अपने वाक्यों की तुलना श्यामपट पर मेरे लिखे वाक्यों से करें।

इस गतिविधि के दौरान, मैंने कक्षा में घूमकर देखा और अवलोकन किया कि कौन चर्चा में भाग ले रहा है, किसने अपने वाक्य पहली ही बार में सही तरीके से लिख लिए और किन विद्यार्थियों को अपना काम बाद में सुधारना पड़ा। मैंने अपने ये अवलोकन अपनी आकलन पुस्तिका में दर्ज किया।

अगले दिन, मैंने पूरी कक्षा को बताया कि पिछले दिन हुई गतिविधि के बीच मुझे वर्तनी से जुड़ी किन विशिष्ट समस्याओं का पता चला है। मैंने ऐसा करके यह सुनिश्चित किया कि जिन विद्यार्थियों को उस कार्य में कठिनाई प्रतीत हुई थी, उनका नाम सामने न आए।

अब मैं हर विषय के बाद इस तरह की एक गतिविधि करता हूँ। मेरे विद्यार्थी भी इसके लिए उत्सुक दिखाई देते हैं। मुझे पता चला है कि यदि हर समूह में उच्च स्तर की उपलब्धि वाले एक विद्यार्थी को शामिल किया जाए, तो यह सबसे ज्यादा प्रभावी होता है, क्योंकि वे विद्यार्थी समूह के दूसरे विद्यार्थियों की सहायता कर सकते हैं।

विचार कीजिए

- अपने विद्यार्थियों की वर्तनी क्षमता के आकलन के लिए सुश्री आशा और श्री द्विवेदी के अलग-अलग तरीकों के बारे में आपकी प्रतिक्रियाएँ क्या हैं?
- आपके अनुसार प्रत्येक तरीके के क्या लाभ और हानियाँ हैं?
- इनमें से कौन-सा तरीका आपके वर्तमान कक्षा अनुभव को सबसे अच्छी तरह व्यक्त करता है?

सुश्री आशा के आकलन का लाभ यह है कि इसमें बहुत कम समय लगता है। हालांकि, यह मूल्यांकन को अन्य शिक्षण से अलग कर देता है और अच्छा प्रदर्शन न करने वाले विद्यार्थियों की ओर ध्यान केंद्रित करता है। श्री द्विवेदी का आकलन का तरीका ज्यादा समय लेता है, लेकिन इस प्रक्रिया में उनके विद्यार्थियों को भी शामिल किया जाता है, सीखने के लिए बातचीत को शामिल किया जाता है, जिन्हें वर्तनी में कठिनाई हो उनकी सहायता

की जाती है और बाद में उपयोगी प्रतिपुष्टि भी दिया जाता है। वर्तनी का आकलन भी ज्यादा सार्थक है क्योंकि इसमें शब्दों को वाक्यों में ही शामिल किया गया है, न कि उन्हें सन्दर्भ से बाहर रखकर आकलन किया जा रहा है। इस पद्धति के परिणामस्वरूप लंबी अवधि में सीखने के लाभ मिलने की संभावना ज्यादा है।

4 विद्यार्थियों को उनके स्वयं के लेखन का मूल्यांकन करने के लिए प्रोत्साहित करना

पारंपरिक रूप से, सीखने के आकलन को पूरी तरह शिक्षक का उत्तरदायित्व माना जाता रहा है। हालांकि, कई देशों में शिक्षक अब यह महसूस करने लगे हैं कि विद्यार्थियों को भी उनकी स्वयं की प्रगति के मूल्यांकन में शामिल किया जा सकता है और किया जाना चाहिए। स्व अवलोकन या स्व आकलन विद्यार्थियों में अपने स्वयं के कार्य का मूल्यांकन करने और इसे सुधारने के तरीकों की पहचान करने पर आधारित होता है।

अब केस स्टडी 2 पढ़िए–

केस स्टडी 2: एक रेखांकित सीढ़ी का उपयोग करना

सुश्री माधवी कटनी में एक शिक्षिका हैं। यहाँ वे एक स्व आकलन साधन के बारे में बता रही हैं, जिसका उपयोग उन्होंने अपने कक्षा पाँच के विद्यार्थियों के साथ सफलतापूर्वक किया है।

एक शैक्षणिक पत्रिका पढ़ते समय मुझे रेखांकित सीढ़ीश की अवधारणा का पता चला। मैंने अपने विद्यार्थियों के साथ इसे प्रयोग करना निश्चित किया। एक चिह्नांकित सीढीं में, विद्यार्थी मेरे साथ मिलकर अपने लेखन के एक अंश का मूल्यांकन करते हैं। मैं सीखने के उद्देश्य निर्धारित करती हूँ और हम दोनों मिलकर निश्चित करते हैं कि उन्हें पूरा किया गया या नहीं। [एक उदाहरण सारणी 1 में दर्शाया गया है।]

*सारणी **1** एक कल्पनाशील कहानी लेखन का आकलन करने वाली* चिह्नांकित सीढीं *का एक उदाहरण। (Symons and Currans, 2008 से लिया गया)*

विद्यार्थी का नाम	शशि सुरे
कक्षा	पाँच
लेखन कार्य	कल्पनाशील कहानी लेखन

विद्यार्थी	लेखन उद्देश्य	शिक्षक
✓	मेरी कहानी एक काल्पनिक स्थान या समय पर आधारित है।	✓
	इसमें वर्णन किया गया है कि क्या देखा या सुना या छुआ जा सकता है।	✓
	इसमें करने-मानने वाले पात्र हैं।	✓ आपकी कहानी में ऐसे पात्र ज्यादा हो सकते हैं। शायद कोई काल्पनिक पक्षी?
✓	मैंने जादू के रूप में विशेष प्रभाव का उपयोग किया।	✓
मुझे मालूम नहीं है कि ये कैसे किया जाता है। मैंने कोशिश की।	मैंने कुछ शब्द बनाकर उनका उपयोग किया।	आपकी कोशिश अच्छी थी। चिंता मत कीजिए, हम इस बारे में बात कर सकते हैं।
✓	मैंने वातावरण तैयार करने के लिए विशेषणों का उपयोग किया।	✓ थोड़े ज्यादा होते तो अच्छा होता।
मैं अपनी कहानी में सुधार लाने के लिए मैं क्या कर सकता/ती हूँ	मुझे अपनी कहानी कई बार पढ़नी पड़ती है। मुझे अपनी वर्तनी के बारे में ज्यादा ध्यान देना चाहिए। मुझे बनाए गए वाक्यों के बारे में सीखना चाहिए। अपनी कहानी लिखने से पहले मुझे इसके बारे में सोचना चाहिए।	

एक चिह्नांकित सीढीं के साथ, विद्यार्थी पहले स्वयं का मूल्यांकन (बायाँ स्तंभ) मेरे द्वारा निर्धारित किए गए शिक्षण उद्देश्यों के अनुसार करते हैं। इसके बाद मैं उनके कार्य का आकलन करती हूँ और उन्हें संक्षेप में लिखित फीडबैक (दायाँ स्तंभ) देती हूँ। इसके बाद वे लिखते हैं कि आगे

उनकी क्या करने की योजना है (अंतिम पंक्ति)। इस प्रक्रिया में न सिर्फ विद्यार्थियों को भी उनकी प्रगति का आकलन शामिल किया जाता है, बल्कि इससे उन्हें पढ़ने और लिखने का अतिरिक्त अभ्यास भी मिलता है।

मैं आकलन सीढीं का उपयोग लेखन विकास के अलग अलग क्षेत्रों में कर सकती हूँ, चाहे वे रचनात्मक हों या जानकारी-आधारित, और सभी क्षमताओं वाले विद्यार्थियों के साथ, उनके सीखने के उद्देश्यों को इसके अनुसार अनुकूलित करके कर सकती हूँ।

कभी-कभी मैं बड़े या ज्यादा सक्षम विद्यार्थी की छोटे या कम आत्मविश्वासी विद्यार्थी के साथ जोड़ी बनाकर उनके कार्य के अंश का एक साथ मूल्यांकन करती हूँ। मेरे विद्यार्थी अपनी अभ्यास पुस्तिका में उनकी मार्किंग लैडर रखते हैं, ताकि मैं समय-समय पर उनकी प्रगति की समीक्षा कर सकूँ।

अपने खुद के आकलन में शामिल होना मेरे विद्यार्थियों के लिए बहुत प्रेरक है। हमारे दो-तरफा लेखन विनिमय के कारण मैंने उनके कार्य में सुधार देखा है।

विचार कीजिए

- विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच इस तरह के संयुक्त आकलन के बारे में आप क्या सोचते हैं? इसके क्या लाभ हैं? इसमें क्या चुनौतियाँ हो सकती हैं?
- मार्किंग लैडर(चिह्नांकित सीढ़ी) से मिलने वाली जानकारी किस तरह आपके पाठों की योजना में योगदान कर सकती है?

गतिविधि 5: एक चिह्नांकित सीढीं बनाना

मार्गदर्शिका के रूप में सारणी 1 में दिए गए उदाहरण का उपयोग करके लेखन विकास के उन क्षेत्रों के लिए अपनी स्वयं की चिह्नांकित सीढीं बनाएँ, जिनमें आपके विद्यार्थी शामिल होते हैं।

सारणी 2 में वर्णात्मक लेखन का आकलन करने वाली एक चिह्नांकित सीढीं की शुरुआत दर्शाई गई है। आपके पाठ के लिए जो भी सबसे ज्यादा उपयुक्त है, आप उसके अनुसार अपनी लैडर को अनुकूलित कर सकते हैं।

*सारणी **2** वर्णनात्मक लेखन का आकलन करने वाली एक मार्किंग लैडर(* चिह्नांकित सीढीं *) की शुरुआत।*

विद्यार्थी का नाम	
कक्षा	
लेखन कार्य	वर्णात्मक लेखन

विद्यार्थी	लेखन उद्देश्य	शिक्षक
	जो समझाया जा रहा है, मैं उसे स्पष्ट करता/ती हूँ।	
	मैं कई तरह के विशेषण जोड़ता/ती हूँ।	
	मैं स्पष्ट, सटीक भाषा का उपयोग करता/ती हूँ।	

मैं अपनी कहानी में सुधार लाने के लिए क्या कर सकता/ती हूँ	

जब आप अपनी मार्किंग लैडर(चिह्नांकित सीढीं) बना लेते हैं, तो इसकी फोटोकॉपी करवाकर अपने विद्यार्थियों में इसे वितरित करें। यदि संभव हो, तो एक पूरी की गई सीढ़ी का उदाहरण दिखाकर उन्हें समझाएँ कि यह किस तरह काम करती है।

इस सीढ़ी का उपयोग एक महीने या सत्र की अवधि के दौरान करके देखें, और यह सुनिश्चित करें कि सभी विद्यार्थियों को उस अवधि के दौरान आपकी प्रतिकिया प्राप्त हो।

विचार कीजिए

- अपने विद्यार्थियों के साथ मार्किंगलैडर(चिह्नांकित सीढीं) के उपयोग का अनुभव आपको कैसा लगा?
- उन्होंने किस तरह की प्रतिक्रिया दी?
- क्या आपको मार्किंग लैडर(चिह्नांकित सीढीं)के उपयोग के कारण उनके भाषा और साक्षरता विकास में कोई सुधार दिखाई दिए?
- आपने इस आकलन तकनीक का उपयोग अपने पाठों की योजना में किस तरह किया?

संसाधन 2, 'प्रगति और प्रदर्शन का आकलन करना', में प्रभावी आकलन अभ्यास के बारे में अधिक जानकारी और सुझाव दिए गए हैं।

वीडियो: प्रगति और प्रदर्शन का आकलन करना

5 सारांश

यह इकाई निगरानी, आकलन और फीडबैक गतिविधियों कौ विद्यार्थियों की भाषाई गतिविधियों को एकीकृत करने के सतत तरीकों पर केंद्रित है। ऐसे अभ्यासो के द्वारा विद्यार्थियों में बोलने और लिखने के कौशल के विकास के बारे में मूल्यवान जानकारी मिल सकती हैं, जिससे आप प्रत्येक विद्यार्थी की और पूरी कक्षा की आवश्यकताओं के अनुसार अपने अध्यापन का निश्चय/निर्धारण कर सकते हैं। अभ्यास के साथ-साथ अध्यापन, निगरानी, आकलन और प्रतिपुष्टि का संयोजन कक्षा में आपकी भूमिका का एक स्वाभाविक अंग बन जाएगा।

संसाधन

संसाधन 1: अवलोकन करना और प्रतिपुष्टि देना

विद्यार्थियों के कार्यप्रदर्शन में सुधार करने में लगातार अवलोकन करना और उन्हें प्रतिक्रिया देना शामिल होता है, ताकि उन्हें पता रहे कि उनसे क्या अपेक्षित है और उन्हें कामों का पूरा करने पर प्रतिक्रिया प्राप्त हो। आपकी रचनात्मक प्रतिक्रिया के माध्यम से वे अपने कार्यप्रदर्शन में सुधार कर सकते हैं।

अवलोकन करना

प्रभावी शिक्षक अधिकांश समय अपने विद्यार्थियों का अवलोकन करते हैं। सामान्य तौर पर, अधिकांश शिक्षक अपने विद्यार्थियों के काम का अवलोकन वे कक्षा में जो कुछ करते हैं उसे सुनकर और देखकर करते हैं। विद्यार्थियों की प्रगति का अवलोकन करना महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इससे उन्हें निम्नलिखित बातों में मदद मिलती है:

- अधिक ऊँचे ग्रेड प्राप्त करना
- अपने कार्यप्रदर्शन के बारे में अधिक सजग रहना और अपनी सीखने की प्रक्रिया के प्रति अधिक जिम्मेदार होना
- अपनी सीखने की प्रक्रिया में सुधार करना
- प्रादेशिक और स्थानीय मानकीकृत परीक्षाओं में उपलब्धि का पूर्वानुमान करना।

इससे आपको एक शिक्षक के रूप में निम्नलिखित काम करने में भी मदद मिलती है:

- कब प्रश्न करें या प्रोत्साहित करें ?
- कब प्रशंसा करें ?
- चुनौती दें या नहीं ?
- एक काम में विद्यार्थियों के अलग अलग समूहों को कैसे शामिल करें ?
- गलतियौं के विषय में क्या करें ?

विद्यार्थी सबसे अधिक सुधार तब करते हैं जब उन्हें उनकी प्रगति के बारे में स्पष्ट और शीघ्र प्रतिक्रिया दी जाती है। अवलोकन करने का उपयोग करना, आपको विद्यार्थियों को यह बताने कि वे कैसे काम कर रहे हैं और उनके सीखने की प्रकिया को उन्नत करने में उन्हें किस अन्य चीज की जरूरत है, इस बारे में नियमित प्रतिक्रिया देने में सक्षम करेगा।

आपके सामने आने वाली चुनौतियों में से एक चुनौती होगी अपने विद्यार्थियों की उनके स्वयं के सीखने के लक्ष्यों को तय करने में मदद करना, जिसे स्व-अवलोकन भी कहा जाता है। विद्यार्थी, विशेष तौर पर, कठिनाई अनुभव करने वाले विद्यार्थी, अपनी स्वयं की सीखने की प्रक्रिया निर्धारित करने के आदी नहीं होते हैं। लेकिन आप किसी परियोजना के लिए अपने स्वयं के लक्ष्य या उद्देश्य तय करने, अपने काम की योजना बनाने और समय सीमाएं तय करने, और अपनी प्रगति की स्व-अवलोकन करने में किसी भी विद्यार्थी की मदद कर सकते हैं। स्व-अवलोकन के कौशल की प्रक्रिया का अभ्यास और उसमें कुशलता प्राप्त करना उनके लिए विद्यालय और उनके सारे जीवन में उपयोगी साबित होगा।

विद्यार्थियों की बात सुनना और प्रेक्षण करना

अधिकांश समय, शिक्षक स्वाभाविक रूप से विद्यार्थियों की बात सुनते और उनका प्रेक्षण करते हैं; यह अवलोकन करने का एक सरल साधन है। उदाहरण के लिए, आप:

- अपने विद्यार्थियों को ऊँची आवाज में पढ़ते समय सुन सकते हैं
- जोड़ियों या समूहकार्य में चर्चाएँ सुन सकते हैं
- विद्यार्थियों को कक्षा के बाहर या कक्षा में संसाधनों का उपयोग करते देख सकते हैं
- समूहों के काम काम करते समय उनकी शारीरिक भाषा का प्रेक्षण कर सकते हैं।

सुनिश्चित करें कि आप जो अभिलेख एकत्रित करते हैं वे विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया या प्रगति का सच्चा प्रमाण हो। सिर्फ वही बात रिकार्ड करें जो आप देख सकते हैं, सुन सकते हैं, उचित सिद्ध कर सकते हैं या जिस पर आप विश्वास कर सकते हैं।

जब विद्यार्थी काम करें, तब कमरे में घूमें और संक्षिप्त प्रेक्षण नोट्स बनाएं। आप कक्षा सूची का उपयोग करके दर्ज कर सकते हैं कि किन विद्यार्थियों को अधिक मदद की जरूरत है, और किसी भी उभरती गलतफहमी को भी नोट कर सकते हैं। इन प्रेक्षणों और नोट्स का उपयोग आप सारी कक्षा को प्रतिक्रिया देने या समूहों अथवा विद्यार्थी विशेष को प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए कर सकते हैं।

प्रतिक्रिया देना

प्रतिक्रिया वह जानकारी होती है जो आप किसी विद्यार्थी को यह बताने के लिए देते हैं कि उन्होंने किसी घोषित लक्ष्य या अपेक्षित परिणाम के संबंध में कैसा कार्य किया है। प्रभावी प्रतिक्रिया विद्यार्थी को:

- जानकारी देती है कि क्या हुआ है
- इस बात का मूल्यांकन करती है कि कोई क्रियाकलाप या काम कितनी अच्छी तरह से किया गया
- मार्गदर्शन देती है कि कार्यप्रदर्शन को कैसे सुधारा जा सकता है।

जब आप हर विद्यार्थी को प्रतिक्रिया देते हैं, तब उसे यह जानने में उनकी सहायता करनी चाहिए कि:

- वे वास्तव में क्या कर सकते हैं ?
- वे अभी क्या नहीं कर सकते हैं ?
- उनका काम अन्य लोगों की तुलना में कैसा है ?
- वे कैसे सुधार कर सकते हैं ?

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि प्रभावी प्रतिक्रिया विद्यार्थियों की मदद करती है। आप यह कभी नहीं चाहेंगें कि आपकी प्रतिक्रिया के अस्पष्ट या अन्यायपूर्ण होने के कारण सीखने की प्रक्रिया में कोई रूकावट आए। प्रभावी प्रतिक्रिया:

- हाथ में लिए गए काम और विद्यार्थी द्वारा सीखी जा रही बात पर संकेंद्रित होती है
- स्पष्ट और ईमानदार होती है, और विद्यार्थी को बताती है कि उसके सीखने की प्रक्रिया के बारे में क्या अच्छी बात है और उसे कहाँ सुधार करना चाहिए
- कार्यवाई के योग्य होती है, और विद्यार्थी को ऐसा कुछ करने को कहती है जिसे करने में वे सक्षम होते हैं
- विद्यार्थी के समझ सकने योग्य उपयुक्त भाषा में दी जाती है
- सही समय पर दी जाती है – यदि वह बहुत जल्दी दी गई तो विद्यार्थी सोचेगा 'मैं यही तो करने जा रहा था!'; बहुत देर से दी गई तो विद्यार्थी का ध्यान और कहीं चला जाएगा और वह वापस लौटकर वह नहीं करना चाहेगा जिसके लिए उसे कहा गया है।

प्रतिक्रिया चाहे बोली जाए या विद्यार्थियों की अभ्यास पुस्तिकाओं में लिखी जाए, वह तभी अधिक प्रभावी होती है यदि वह नीचे दिए गए दिशानिर्देशों का पालन करती है।

प्रशंसा और सकारात्मक भाषा का उपयोग करना

जब हमारी प्रशंसा की जाती है और हमें प्रोत्साहित किया जाता है तो आमतौर पर हम उस समय के मुकाबले काफी अधिक बेहतर महसूस करते हैं, अपेक्षाकृत जब हमारी आलोचना की जाती है या हमारी गलती सुधारी जाती है। सुदृढ़ीकरण और सकारात्मक भाषा समूची कक्षा और सभी उम्र के व्यक्तियों के लिए प्रेरणादायक होती है। याद रखें कि प्रशंसा को विशिष्ट और स्वयं विद्यार्थी की बजाय किए गए काम पर लक्षित(देखना/केन्द्रित) होना चाहिए, अन्यथा वह विद्यार्थी की प्रगति में मदद नहीं करेगी। 'शाबाश' सामान्य शब्द है, इसलिए निम्नलिखित में से कोई बात कहना बेहतर होगा:

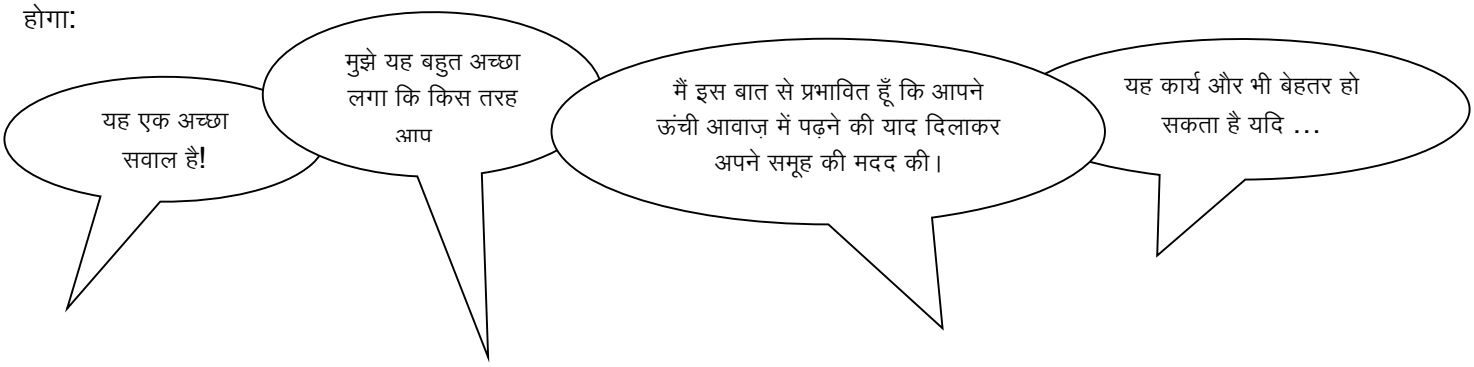

संकेत देने के साथ-साथ सुधार का उपयोग करना

अपने विद्यार्थियों के साथ आप जो बातचीत करते हैं वह उनके सीखने की प्रक्रिया में मदद करती है। यदि आप उन्हें बताते हैं कि उनका उत्तर गलत है और संवाद को वहीं समाप्त कर देते हैं, तो आप सोचने और स्वयं प्रयास करने में उनकी मदद करने का अवसर खो देते हैं। यदि आप विद्यार्थियों को संकेत देते हैं या आगे कोई प्रश्न करते हैं, तो आप उन्हें अधिक गहराई से सोचने को प्रेरित करत`हैं और उत्तर खोजने तथा अपने स्वयं के सीखने का दायित्व लेने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करते हैं। उदाहरण के लिए, आप बेहतर उत्तर के लिए प्रोत्साहित या किसी समस्या पर किसी अलग दृष्टिकोण को प्रेरित करने के लिए निम्नलिखित बातें कह सकते हैं:

दूसरे विद्यार्थियों को एक दूसरे की सहायता करने के लिए प्रोत्साहित करना उपयुक्त हो सकता है। आप यह काम निम्नलिखित टिप्पणियों के साथ शेष कक्षा के लिए अपने प्रश्नों को प्रस्तुत करके कर सकते हैं:

विद्यार्थियों को हां या नहीं के साथ सुधारना करवाना वर्तनी या संख्या के अभ्यास की तरह के कामों के लिए उपयुक्त हो सकता है, लेकिन यहां पर भी आप विद्यार्थियों को उभरते प्रतिमानों पर दृष्टि डालने या समान उत्तरों से संबंध बनाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं या चर्चा शुरू कर सकते हैं कि कोई उत्तर गलत क्यों है।

स्वयं सुधार करना और समकक्षों से सुधार करवाना प्रभावी होता है और आप इसे विद्यार्थियों से दिए गए कामों को जोड़ियों में करते समय स्वयं अपने और एक दूसरे के काम की जाँच करने को कहकर प्रोत्साहित कर सकते हैं। एक समय में एक पहलू को सही करने पर ध्यान केंद्रित करना सबसे अच्छा होता है ताकि भ्रम में डालने वाली ढेर सारी जानकारी न हो।

संसाधन 2: प्रगति और प्रदर्शन का आकलन करना

विद्यार्थियों के शिक्षण का मूल्यांकन करने के दो उद्देश्य हैं:

- योगात्मक मूल्यांकन पीछे मुड़ कर देखता है और जो पहले से सीखा गया है उसका निर्णय करता है। यह सामान्यतया परीक्षाओं के स्वरूप में आयोजित किया जाता है, जहाँ विद्यार्थियों को परीक्षा में प्रश्नों के प्रति उनकी उपलब्धियों को बताते हुए श्रेणीकृत किया जाता है। इससे परिणामों की रिपोर्टिंग में मदद मिलती है।
- निर्माणात्मक मूल्यांकन (या शिक्षण का मूल्यांकन) काफ़ी अलग है, जो अधिक अनौपचारिक तथा नैदानिक स्वरूप का होता है। शिक्षक उन्हें शिक्षण प्रक्रिया के अंग के रूप में उपयोग करते हैं, उदाहरण के लिए, जहाँ यह पता लगाने के लिए प्रश्न करने का इस्तेमाल किया जाता है कि क्या विद्यार्थियों ने किसी चीज़ को समझा है या नहीं। इस मूल्यांकन के परिणामों का फिर अगले शिक्षण अनुभव को बदलने के लिए उपयोग किया जाता है। अवलोकन और फ़ीडबैक निर्माणात्मक मूल्यांकन का हिस्सा है।

निर्माणात्मक मूल्यांकन शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ाता है, क्योंकि सीखने के लिए, अधिकांश विद्यार्थियों को:

- समझना चाहिए कि उनसे क्या सीखने की उम्मीद की जा रही है
- जानना चाहिए कि अपनी पढ़ाई में वे इस समय किस स्तर पर हैं
- समझना चाहिए कि वे किस प्रकार प्रगति कर सकते हैं (अर्थात क्या पढ़ना चाहिए और कैसे पढ़ना चाहिए)
- जानना चाहिए कि कब उन्होंने लक्ष्य और अपेक्षित परिणाम हासिल कर लिए हैं।

शिक्षक के रूप में, अगर आप प्रत्येक पाठ में उपर्युक्त चार बिंदुओं पर ध्यान देंगे, तो आप अपने विद्यार्थियों से सर्वश्रेष्ठ परिणाम प्राप्त करेंगे। इस प्रकार पढ़ाने से पहले, पढ़ाते समय और पढ़ाने के बाद मूल्यांकन किया जा सकता है:

- पहले: पढ़ाने से पहले मूल्यांकन से आपको यह जानने में मदद मिलती है कि विद्यार्थी क्या जानते हैं और पढ़ाने से पहले क्या कर सकते हैं ? यह आधार-रेखा निर्धारित करता है और आपको अपनी शिक्षण योजना तैयार करने के लिए प्रारंभिक बिंदु देता है। विद्यार्थी क्या जानते हैं इस बारे में अपनी समझ को बढ़ाने से, विद्यार्थियों को जिसमें पहले से ही कुशलता प्राप्त है, उसे दुबारा पढ़ाने या संभवतः उन्हें जो जानना या समझना है (लेकिन नहीं जानते), उसे छोड़ने के मौक़े कम होंगे।
- पढ़ाते समय: कक्षा में पढ़ाते समय मूल्यांकन करने में यह देखना शामिल है कि क्या विद्यार्थी सीख रहे हैं और उनमें सुधार हो रहा है। इससे आपको अपनी शिक्षण पद्धति, संसाधनों और गतिविधियों का समायोजन करने में मदद मिलेगी। यह आपको यह समझने में मदद करेगा कि विद्यार्थी वांछित उद्देश्य की दिशा में किस प्रकार प्रगति कर रहा है और आपका शिक्षण कितना सफल है।
- पढ़ाने के बाद: शिक्षण के बाद किया जाने वाला मूल्यांकन पुष्टि करता है कि विद्यार्थियों ने क्या सीखा है और आपको दर्शाता है कि किसने सीखा है और किसे अभी मदद की ज़रूरत है। इससे आप अपने शिक्षण लक्ष्य का प्रभावी आकलन कर सकेंगे।

पहले: आपके विद्यार्थी क्या सीखेंगे इस बारे में स्पष्ट रहना

जब आप तय करते हैं कि विद्यार्थियों को पाठ या पाठों की श्रृंखला में क्या सीखना चाहिए, तो आपको यह उनके साथ साझा करना चाहिए। सावधानी से अंतर करें कि विद्यार्थियों को आप क्या करने के लिए कह रहे हैं, और उनसे सीखने की उम्मीद की जा रही है। ऐसे प्रश्न कीजिए जिससे कि आपको इस बात का आकलन करने का अवसर प्राप्त हो कि क्या उन्होंने वास्तव में समझा है या नहीं। उदाहरण के लिए:

विद्यार्थियों को जवाब देने से पहले सोचने के लिए कुछ सेकंड दें, या शायद विद्यार्थियों को पहले जोड़े या छोटे समूहों में अपने जवाब पर चर्चा करने के लिए कहें। जब वे आपको अपना उत्तर बताएँ, आप जान जाएँगे कि क्या वे समझते हैं कि उन्हें क्या सीखना है।

पहले: जानना कि विद्यार्थी अपने शिक्षण के किस स्तर पर हैं

अपने विद्यार्थियों में सुधार के लिए मदद करने के क्रम में आपको और उन्हें अपने ज्ञान और समझदारी की वर्तमान अवस्था को जानने की ज़रूरत पड़ेगी। जैसे ही आप वांछित शिक्षण परिणामों या लक्ष्यों को साझा कर लें, आप निम्नलिखित कार्य कर सकते हैं:

- विद्यार्थियों को मानसिक मानचित्र(माइंड मेप) बनाने या उस विषय के बारे में वे पहले से क्या जानते हैं, उसे सूचीबद्ध करने के लिए जोड़े में कार्य करने के लिए कहें, और उन्हें उसे पूरा करने के लिए पर्याप्त समय दें, लेकिन उन चंद विचारों के लिए बहुत ज्यादा समय नहीं देना चाहिए। उसके बाद आप उन मानसिक मानचित्र या सूचियों की समीक्षा करें।
- महत्वपूर्ण शब्दावली को बोर्ड पर लिखें और प्रत्येक शब्द के बारे में वे क्या जानते हैं, यह बताने के लिए स्वेच्छा से उन्हें आगे आने के लिए कहें। फिर बाक़ी कक्षा से कहें कि यदि वे शब्द समझते हैं, तो अपना अंगूठा ऊपर (थम्ब्स-अप) की मुद्रा में ऊपर उठाएँ, यदि वे बहुत कम जानते हैं या बिल्कुल नहीं जानते हैं, तो अंगूठा` झुकाने की मुद्रा में नीचे करें और यदि वे कुछ जानते हैं, तो अंगूठे को आड़ा यानी बीच में रखें।

कहाँ से शुरुआत करनी है, यह जानने का आशय है कि आप अपने विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिक और रचनात्मक रूप से पाठ की योजना बना सकते हैं। यह भी महत्वपूर्ण है कि आपके विद्यार्थी यह मूल्यांकन करने में सक्षम हों कि वे कितनी अच्छी तरह सीख रहे हैं, ताकि आप और वे, दोनों जान सकें कि उन्हें आगे क्या सीखने की ज़रूरत है। अपने विद्यार्थियों को स्वयं अपने सीखने का मूल्यांकन/आकलन का अवसर प्रदान करने से उन्हें आजीवन शिक्षार्थी बनाने में मदद मिलेगी।

पढ़ाते समय: शिक्षा में विद्यार्थियों की प्रगति सुनिश्चित करना

जब आप विद्यार्थियों से उनकी वर्तमान प्रगति के बारे में बात करते हैं, तो सुनिश्चित करें कि उन्हें आपका फीडबैक उपयोगी और रचनात्मक, दोनों लगे। इसे निम्नांकित कार्यों के द्वारा करें:

- विद्यार्थियों को उनकी सामर्थ्य और यह जानने में सहायता करना कि वे कैसे और सुधार कर सकते हैं
- इस बारे में स्पष्ट रहना कि आगे और किस चीज़ के विकास की ज़रूरत है
- इस बारे में सकारात्मक रहना कि वे किस प्रकार अपनी शिक्षा का विकास कर सकते हैं,यह जाँचना कि वे समझते हैं और आपकी सलाह का उपयोग करने में सक्षम महसूस करते हैं।

आपको विद्यार्थियों के लिए उनके शिक्षण को बेहतर बनाने के लिए अवसर उपलब्ध कराने की आवश्यक पड़ेगी। इसका अर्थ यह हुआ कि पढ़ाई के मामले में विद्यार्थियों के वर्तमान स्तर और जहाँ आप उन्हें देखना चाहते हैं, इसके अंतराल को पाटने के लिए हो सकता है कि आपको अपनी पाठ योजना को संशोधित करना पड़े। ऐसा करने के लिए आपको निम्नलिखित कार्य करना होगा:

- कुछ ऐसे कार्यों पर वापस नज़र दौड़ानी होगी, जिनके बारे में आपने सोचा था कि वे पहले से जानते हैं
- आवश्यकता के अनुसार विद्यार्थियों के समूह बनाना, उन्हें अलग-अलग कार्य देना
- विद्यार्थियों को स्वयं यह निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करना कि उन्हें किन संसाधनों को पढ़ने की ज़रूरत है ताकि वे 'स्वयं अपना अंतराल पाट सकें'
- 'निम्न प्रवेश, ऊँची सीमा' वाले कार्यों का उपयोग करना, ताकि सभी विद्यार्थी प्रगति कर सकें - इन्हें इसलिए अभिकल्पित किया गया है कि सभी विद्यार्थी काम शुरू कर सकें, लेकिन अधिक योग्य विद्यार्थी रोका न जाए और वे अपने ज्ञान के विस्तार के लिए आगे काम कर सकें।

शिक्षण की गति को धीमा करके, वास्तव में आप पढ़ाई को तेज़ करते हैं, क्योंकि आप विद्यार्थियों को उस पर सोचने और समझने का समय और आत्मविश्वास देते हैं, जिसमें उन्हें सुधार लाने की ज़रूरत होती है। विद्यार्थियों को आपस में अपने काम के बारे में बात करने का अवसर देकर, और इस बात पर चिंतन करके कि अंतराल कहाँ पर है और वे इसे किस प्रकार से ख़त्म कर सकते हैं, आप उन्हें स्वयं का आकलन करने के तरीक़े उपलब्ध कर रहे होते हैं।

पढ़ाने के बाद: प्रमाण एकत्रित करना और उसकी व्याख्या करना, और आगे की योजना बनाना

जब सीखना–सिखाना चल रहा हो और कक्षा-कार्य और गृह-कार्य निर्धारित कर दिया गया हो।, ज़रूरी है कि:

- इस बात का पता लगाएँ कि आपके विद्यार्थी कितनी अच्छी तरह कार्य कर रहे हैं
- इसे अगले पाठ के लिए अपनी योजना सूचित करने के लिए उपयोग में लाएँ

- विद्यार्थियों को प्रतिक्रिया दें।

मूल्यांकन की चार प्रमुख स्थितियों की नीचे चर्चा की गई है।

सूचना या प्रमाण एकत्रित करना

प्रत्येक छात्र, स्वयं अपनी गति और शैली में, स्कूल के अंदर और बाहर अलग प्रकार से सीखता है। इसलिए, विद्यार्थियों का मूल्यांकन करते समय आपको दो चीज़ें करनी होंगी:

- विविध सूत्रों से जानकारी एकत्रित करें - स्वयं अपने अनुभव से, छात्र, अन्य छात्रों, अन्य शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों से।
- विद्यार्थियों का व्यक्तिगत रूप से, जोड़ों में और समूहों में मूल्यांकन करें, तथा स्व-मूल्यांकन को बढ़ावा दें। अलग–अलग विधियों का प्रयोग महत्वपूर्ण है, क्योंकि कोई एक पद्धति आपको वह सभी जानकारी उपलब्ध नहीं कराती, जिसकी आपको ज़रूरत है। विद्यार्थियों के सीखने और प्रगति के बारे में जानकारी इकट्ठा करने के विभिन्न तरीक़ों में शामिल हैं, देखना, सुनना, विषयों और प्रकरणों पर चर्चा, तथा लिखित कार्य और गृह-कार्य की समीक्षा करना।

अभिलेखीकरण

भारत भर के सभी स्कूलों में अभिलेखीकरण का सबसे आम स्वरूप रिपोर्ट कार्ड के उपयोग के माध्यम से होता है, लेकिन इसमें आपको एक विद्यार्थी के सीखने या व्यवहार के सभी पहलुओं को रिकॉर्ड करने की सुविधा नहीं हो सकती है। इस काम को करने के कुछ सरल तरीक़े हैं, उन पर भी आप विचार कर सकते हैं, जैसे कि:

- सीखते–सिखाते समय जो आप देखते हैं उसे डायरी/नोटबुक/रजिस्टर में नोट करना।
- विद्यार्थियों के कार्य के नमूने (लिखित, कला, शिल्प, परियोजनाएँ, कविताएँ आदि) पोर्टफ़ोलियो में रखना।
- प्रत्येक विद्यार्थी का प्रोफ़ाइल तैयार करना
- विद्यार्थियों की किन्हीं असामान्य घटनाओं, परिवर्तनों, समस्याओं, शक्तियों और शिक्षण प्रमाणों को नोट करना।

प्रमाण की व्याख्या/विश्लेषण

जैसे ही सूचना और प्रमाण एकत्रित और अभिलिखित हो जाए, उसका विश्लेषण करना ज़रूरी है, ताकि यह समझ सकें कि प्रत्येक विद्यार्थी किस प्रकार सीख रहा है और प्रगति कर रहा है। इस पर सावधानी से विचार करने और विश्लेषण की आवश्यकता है। फिर आपको शिक्षण में सुधार करने, संभवतः विद्यार्थियों को फ़ीडबैक देकर या नए संसाधनों की खोज करके, समूहों को पुनर्व्यवस्थित करके, या शिक्षण बिंदु को दोहरा कर अपने निष्कर्षों पर कार्य करने की आवश्यककता है।

सुधार के लिए योजना बनाना

मूल्यांकन, विशिष्ट और विभेदक शिक्षण गतिविधियों की स्थापना द्वारा प्रत्येक विद्यार्थी को सार्थक रूप से सीखने के अवसर प्रदान करने, अधिक सहायता की आवश्यक बाते विद्यार्थियों पर ध्यान देने और अधिक उन्नत विद्यार्थियों को चुनौती देने वाले सार्थक शिक्षण अवसर उपलब्ध कराने में आपकी मदद कर सकते हैं।

अतिरिक्त संसाधन

- 'Using marking ladders to support children's self-assessment in writing' by Victoria Symons and Deborah Currans: http://www.campaign-for-learning.org.uk/cfl/assets/documents/CaseStudies/Wooler(%20final%20pdf).pdf
- 'Using marking ladders to support children's self-assessment of writing', a poster by Victoria Symons and Deborah Currans: http://www.campaign-for-learning.org.uk/cfl/assets/documents/CaseStudies/Yr1Wooler.pdf
- Documentation and reports on continuous assessment in elementary education: http://www.ncert.nic.in/departments/nie/dee/publication/report.html#

संदर्भ/संदर्भग्रंथ सूची

Graham, J. and Kelly, A. (2010) 'Monitoring and assessing writing', Chapter 6 in *Writing under Control: Teaching Writing in the Primary School*. London: Routledge.

Graham, J. and Kelly, A. (2012) 'Monitoring and assessing reading', Chapter 4 in *Reading under Control: Teaching Reading in the Primary School*. London: Routledge.

Graves, D. (2003) *Writing: Teachers and Children at Work*. Portsmouth: Heinemann.

Symons, V. and Currans, D. (2008) 'Using marking ladders to support children's self-assessment in writing' (online), Campaign for Learning. Available from: http://www.campaign-for-learning.org.uk/cfl/assets/documents/CaseStudies/Wooler(%20final%20pdf).pdf (accessed 31 October 2014). Additionally, a poster by the same authors is available from: http://www.campaign-for-learning.org.uk/cfl/assets/documents/CaseStudies/Yr1Wooler.pdf (accessed 31 October 2014).

Tibetan Teachers Professional Development Website (undated) 'Source Book on Assessment for Classes I–V (Environmental Studies' (online). Available from: http://www.tibetanteachers.com/book-list-assessment/386-source-book-on-assessment-for-classes-i-v-environmental-studies (accessed 19 November 2014).

Walker, M. (2014) 'National assessment in India' (online), Research Developments, Australian Council for Educational Research, 11 March. Available from: http://rd.acer.edu.au/article/national-assessment-in-india (accessed 19 November 2014).

अभिस्वीकृतियाँ

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/)। नीचे दी गई सामग्री मालिकाना हक की है तथा इस परियोजना के लिए लाइसेंस के अंतर्गत ही उपयोग की गई है, तथा इसका Creative Commons लाइसेंस से कोई वास्ता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि इस सामग्री का उपयोग अननुकूलित रूप से केवल TESS-India परियोजना के भीतर किया जा सकता है और किसी भी बाद के OER संस्करणों में नहीं। इसमें TESS-India, OU और UKAID लोगो का उपयोग भी शामिल है।

इस यूनिट में सामग्री को पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति के लिए निम्न स्रोतों का कृतज्ञतापूर्ण आभार:

सारणी 1:साइमंस, वी. और करंस, डी. (2008) के Using marking ladders to support children's self-assessment in writing', शिक्षा अभियान, http://www.campaignforlearning.org.uk से लिया गया। (Table 1: adapted from Symons, V. and Currans, D. (2008) 'Using marking ladders to support children's self-assessment in writing', Campaign for Learning, http://www.campaignforlearning.org.uk.)

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन अध्यापक शिक्षकों, मुख्याध्यापकों, अध्यापकों और विद्यार्थियों के प्रति आभार प्रकट किया जाता है जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।